



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 72]
No. 72]

नई विल्सो, शनिवार, फरवरी 28, 1981/फाल्गुन 9, 1902
NEW DELHI, SATURDAY, FEBRUARY 28, 1981/ PHALGUNA 9, 1902

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
Separate pagings are given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई विल्सो, 28 फरवरी, 1981

सं. 720 विं. 85 (अ).—राष्ट्रपति द्वारा जारी की गई निम्न-लिखित उद्घोषणा संविधान के सूचनार्थ प्रकाशित की जा रही है:—

अतः मुझे, भारत के राष्ट्रपति नीतिमंडल द्वारा को मणिपुर राज्य के उत्तरांचल से एक रिपोर्ट प्राप्त हुई है, और इन रिपोर्ट तथा मुझे प्राप्त अन्य सूचना पर विचार करते के बावजूद मेरा समाधान ही गया है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है, जिसमें राज्य का शासन भारत के संविधान (जिसे इसमें इसके पश्चात् “संविधान” कहा गया है) के उपरांतों के मनुस्तार महीन लाया जा सकता है;

अतः अब मैं, संविधान के अनुच्छेद 356 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का तथा उम्म नियमित भूमि समर्थ बनाने वाली ग्राम सभी शक्तियों का प्रयोग करते हुए एतद्वारा उद्घोषणा करता हूँ कि मैं:—

(क) उक्त राज्य की सरकार के सभी हस्त प्रीत इस राज्य के राज्यपाल में निहित, तथा उनके द्वारा प्रयोक्तव्य सभी शक्तियां, भारत के राष्ट्रपति के रूप में स्वयं संभालता हूँ;

(ख) ज्ञावित करता हूँ कि उक्त राज्य के विधान मंडल की शक्तियां संसद द्वारा या उसके प्राधिकार के अधीन प्रयोक्तव्य होंगी;

(ग) निम्नलिखित आमुखिक और पारिणामिक उपर्युक्त करता हूँ जो

इस उद्घोषणा के उद्देश्यों को प्रभावी बनाने के लिए मुझे प्रावधारक या वान्धीय प्रतीत होते हैं, प्राप्ति:—

(1) इस उद्घोषणा के उपर्युक्त खंड (क) के प्राधार पर ऐसा विभाग गए हृषी और शक्तियों का प्रयोग करते हैं, ऐसे लिए भारत के राष्ट्रपति के रूप में उस सीमा तक जिस तक भी ठीक समान् उक्त राज्य के राज्यपाल के माध्यम से कार्य करता विधिपूर्ण होगा;

(2) उक्त राज्य के संबंध में संविधान के निम्नलिखित उपरांतों के प्रवर्तन को एतद्वारा विभावित किया जाता है, प्राप्ति:—

अनुच्छेद 3 के परन्तुका का उतना भाग जिसने का संबंध राष्ट्रपति द्वारा राज्य के विधान मंडल को निदेश करते से है;

अनुच्छेद 151 के खंड (2) का उतना भाग जिसने का संबंध भारत के नियतक और महालेला परीक्षक द्वारा राज्यपाल के समक्ष प्रस्तुत किए गए, प्रतिवेदनी को राज्य के विधानमंडल के समक्ष रखे जाने से है;

अनुच्छेद 163 और 164,

अनुच्छेद 166 के खंड (3) का उतना भाग जिसने का संबंध राज्य मन्त्रालय के कार्य के अंतर्गत विभाग से है;

अनुच्छेद 167 और 169;

अनुच्छेद 174 का खंड (1) अनुच्छेद 175, 176, और 177 ;

अनुच्छेद 179 का खंड (ग) और उस अनुच्छेद का प्रथम परन्तुक ;

अनुच्छेद 181, 188, 189, 193, 194, 196 और 198 ;

अनुच्छेद 199 का खंड (3) और खंड (4) ;

अनुच्छेद 208 से 211 (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) ;

अनुच्छेद 213 के खंड (1) का परन्तुक और खंड (3) का परन्तुक ; और

अनुच्छेद 323 के खंड (2) का उतना भाग जितने का संबंध लापत साहूत रिपोर्ट को राज्य के विधान मंडल के समक्ष रखे जाने से है ;

(iii) संविधान में राज्यपाल के प्रति किसी निवेश का अर्थ उस राज्य के संबंध में राष्ट्रपति के प्रति निवेश लगाया जाएगा और उसमें राज्य के विधान मंडल या विधान सभा के प्रति किसी निवेश का, जहां तक उसका संबंध उसके कुपयों और उसकी प्रक्रियों से है, अर्थ, जब तक कि संदर्भ द्वारा अन्यथा अपेक्षित न हो, संसद के प्रति निवेश लगाया जाएगा और विधायिकाओं अनुच्छेद 213 में राज्यपाल और राज्य के विधान मंडल या उसके भवनों के प्रति निवेशों का अर्थ, क्रमसः राष्ट्रपति और संसद या उसके सदनों के प्रति निवेश लगाया जाएगा :

परन्तु इसमें की कोई बात अनुच्छेद 153, अनुच्छेद 155 से लेकर अनुच्छेद 159 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं), अनुच्छेद 299 और अनुच्छेद 361 तथा द्वितीय अनुसूची के पैरा 1 से लेकर पैरा 4 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) के उपबंधों पर प्रभाव नहीं डालेगी और न राष्ट्रपति को उस खंड के उपबंध (1) के अधीन उस सीमा तक जहां तक वह ठीक समझे उक्त राज्य के राज्यपाल के भाष्यम से कार्य करते से निवारित करेगी ;

(iv) संविधान में राज्य के विधान मंडल के या एवंद्वारा बनाए गए अधिनियमों या विधियों के प्रति किसी निवेश का ए से अर्थ लगाया जाएगा मानो उसके अंतर्गत इस उद्देश्यों के आधार पर संसद द्वारा या राष्ट्रपति या संविधान के अनुच्छेद 357 के खंड (1) के उपबंध (क) और सामान्य खंड अधिनियम, 1897 (1897 का 10) जैसा कि मणिपुर सामान्य खंड अधिनियम, 1966 (1966 का मणिपुर अधिनियम 3) के द्वारा राज्य के विधान मंडल के अधिनियमों पर प्रयोक्तव्य है और उस सामान्य खंड अधिनियम का उतना भाग जितना राज्य विधियों पर लागू होता है, ऐसे किसी अधिनियम या विधि के बारे में ऐसे प्रभावी होता मानो यह उस राज्य के विधान मंडल का अधिनियम हो ।

नई दिल्ली :

28 फरवरी, 1981

नीनम संसीच रेस्ट्री.

राष्ट्रपति

[फा० सं० 5/11013/1/81—स०० एस० आर०]

नई दिल्ली :

28 फरवरी, 1981

एम० एल० कम्पानी,

अपर सचिव,

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 28th February, 1981

G.S.R. 85 (E).—The following proclamation by the President is published for general information:—

Whereas, I, Neelam Sanjiva Reddy, President of India have received a report from the Governor of the State of Manipur and after considering the report and other information received by me, I am satisfied that a situation has arisen in which the Government of that State cannot be carried on in accordance with the provisions of the Constitution of India (hereinafter referred to as "the Constitution");

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by article 356 of the Constitution and of all other powers enabling me in that behalf, I hereby proclaim that I—

- (a) assume to myself as President of India all functions of the Government of the said State and all powers vested in or exercisable by the Governor of that State;
- (b) declare that the powers of the Legislature of the said State shall be exercisable by or under the authority of Parliament; and
- (c) make the following incidental and consequential provisions which appear to me to be necessary or desirable for giving effect to the objects of this proclamation, namely:—

(i) in the exercise of the functions and powers assumed to myself by virtue of clause (a) of this proclamation as aforesaid, it shall be lawful for me as President of India to act to such extent as I think fit through the Governor of the said State;

(ii) the operation of the following provisions of the Constitution in relation to that State is hereby suspended, namely:—

so much of the proviso to article 3 as relates to the reference by the President to the Legislature of the State;

so much of clause (2) of article 151 as relates to the laying before the Legislature of the State of the reports submitted to the Governor by the Comptroller and Auditor-General of India:

articles 163 and 164;

so much of clause (3) of article 166 as relates to the allocation among the Ministers of the business of the Government of the State;

articles 167 and 169;

clause (1) of article 174; articles 175, 176 and 177;

clause (c) of article 179 and the first proviso thereto;

articles 181, 188, 189, 193, 194, 196 and 198;

clauses (3) and (4) of article 199;

articles 208 to 211 (both inclusive);

the proviso to clause (1) and the proviso to clause (3) of article 213; and

so much of clause (2) of article 323 as relates to the laying of the report with a memorandum before the Legislature of the State;

(iii) any reference in the Constitution to the Governor shall, in relation to the said State, be construed as a reference to the President, and any reference therein to the Legislature of the State or the Houses thereof, shall, in so far as it relates to the functions and powers thereof, be construed, unless the context otherwise requires, as a reference to Parliament, and in particular, references in article 213 to the Governor and the Legislature of the State or the Houses thereof, shall be construed as references to the President and to Parliament or the Houses thereof respectively :

Provided that nothing herein shall affect the provisions of article 153, articles 155 to 159 (both inclusive); article 299 and article 361 and paragraphs 1 to 4 (both inclusive) of the Second Schedule or prevent the President from acting under sub-clause (i) of this clause to such extent as he thinks fit through the Governor of the said State;

(iv) any reference in the Constitution to Acts or laws of or made by the Legislature of the State shall be construed as including a reference to Acts or laws made, in exercise of the powers of the Legislature of the State, by Parliament by virtue of this Proclamation, or by the President or other authority referred to in sub-clause (a) of clause (1) of article 357 of the Constitution, and the General Clauses Act, 1897 (10 of 1897) as applicable to the Acts of the Legislature of the State by virtue of the Manipur General Clauses Act, 1966 (Manipur Act 3 of 1966) and so much of the said General Clauses Act, 1897 as applies to State Laws shall have effect in relation to any such Act or law as if it were an Act of the Legislature of the State.

NEW DELHI :
The 28th February, 1981.

NEELAM SANJIVA REDDY,
President.

[V/11013/1/81-CSR]

NEW DELHI :
The 28th February, 1981.

M.L. KAMPANI,
Additional Secretary.

आवेदन

नई दिल्ली, 28 फरवरी, 1981

सांकेतिक 86 (अ).—गठ, पत्रिकाएँ जारी किया गया निम्नलिखित प्रादेश सर्वसाधारण के सूचनार्थ प्रकाशित किया जा रहा है:—

भारत के संविधान के अनुच्छेद 356 के अधीन मंत्र द्वारा आज फरवरी, 1981 के अद्वाईमध्ये दिन जारी की गई उद्घोषणा के खंड (ग) के उपरांत

(1) का अनुसरण करते हुए मैं एनद्डारा निदेश देता हूँ कि मणिपुर राज्य सरकार के सभी कात्य प्रौद्योगिकीय संविधान के अधीन या उस राज्य में प्रवृत्ति किसी विधि के अधीन उस राज्य के राज्यपाल में निहित या उसके द्वारा प्रयोक्तव्य सभी प्राप्तियाँ, जिनको राष्ट्रपति ने उक्त उद्घोषणा के खंड (क) के पाठ्यानुसार पर स्वयं संभाल लिया है, राष्ट्रपति के अधीक्षण, निवेशन और नियंत्रण के अध्याधीन रहते हुए, उक्त राज्य के राज्यपाल द्वारा भी प्रयोक्तव्य होती है।

नई दिल्ली,
28 फरवरी, 1981।

नीलम संजीव रेडी,
राष्ट्रपति

[फा० सं० 5/110013/1/81-सी० एस० आर०]

नई दिल्ली,
28 फरवरी, 1981।

एम० एल० कम्पानी,
प्रादेश सचिव

ORDER

New Delhi, the 28th February, 1981

G.S.R. 86 (E).—The following Order by the President is published for general information :—

In pursuance of sub-clause (i) of clause (c) of the Proclamation issued on this the 28th day of February, 1981, by me under article 356 of the Constitution of India, I hereby direct that all the functions of the Government of the State of Manipur and all the powers vested in or exercisable by the Governor of that State under the Constitution or under any law in force in that State, which have been assumed by the President by virtue of clause (a) of the said Proclamation, shall, subject to the superintendence, direction and control of the President be exercisable also by the Governor of the said State.

NEW DELHI :
The 28th February, 1981.

NEELAM SANJIVA REDDY,
President.

[V/11013/1/81-CSR]

NEW DELHI :
The 28th February, 1981.

M.L. KAMPANI,
Additional Secretary

